ख़लील और ज़बीह की कीर्ति

मौलाना हसन अब्बास फ़ितरत साहब

कुर्बानी अर्थात बलिदान का इतिहास उतना ही प्राचीन है जितना मानवता का इतिहास और यह भी सर्वमान्य सत्य है कि बलिदान और त्याग मानवता का सत् और सर्वश्रेष्ट भाव है जिस पर बलिदानी एवं त्यागी को गौरव और हर्ष की अनुभूति होती है। उसका बलिदान स्वीकार हो जाने पर जितनी प्रसन्नता होती है, रद्द होने पर उतना ही कष्ट और ग्लानि होता है परन्तु परमेश्वर के यहाँ स्वीकृति–अस्वीकृत का माप–दंड मन की शुद्धता और ईश्वर से प्रतिबद्धता है और कुछ नहीं। लेशमात्र भलाई का स्वीकार करना और बहुत सी बुराइयों का क्षमादान उसकी विशेषता है। हज़रत **''आदम''** के पुत्रों का वृत्तांत क़ुआन पाक में है, दोनों ने अल्लाह की राह में कुर्बानी भेंट की। एक के यहां मन की शुद्धता थी दूसरे के यहां कपट। शुद्धता वाले **(हाबील)** की कुर्बानी क़ुबूल हुई तो वह उसी में डूब गया और हत्या की धमकी की भी अपेक्षा कर गया और कपट वाले **(क़ाबील)** कुर्बानी रद्द हुई तो वह क्रोध में अंधा हो गया और अपने सगे भाई और साथी को मार डाला। परन्तु जनाब इब्राहीम ख़लील (अ0) का प्रसंग ही अलग है वह पैग़म्बर थे और महिमामयी **(उलुल अज़म)** पैग़म्बर। उनका बचपन क़ौम कबीले के विरोध, मूर्तिभंजन और अल्लाह के अतिरिक्त अन्य से लौ लगाने के विरूद्ध धर्मयुद्ध में बीता, दंडस्वरूप ''नमरूद'' की आग में डाले गए, बेघबार हुए तो मानव जाति की हिदायत का चिराग़ प्रत्येक गली–कूचे में जलाते फिरे। ख़ानाबदोशी के जीवन में भी पैग़म्बरी का ध्वज ऊंचा किए रहे। प्रत्येक कठिन दौर और कड़ी मन्ज़िल से गुज़रे मगर सत्यवाद के प्रचार की तीव्र गति में फ़र्क नहीं आया। पिछली अवस्था में पुत्र लाभ से सम्मानित हुए तो ईश्वर को धन्यवाद दिया परन्तु सन्तान न होने पर कभी गिला नहीं किया था। और जब वही बच्चा बड़ा हुआ, चलने–फिरने लगा तो अल्लाह नेउसे ऐसे ढंग से वापस मांगा जिसका अनुपालन अल्लाह के ख़लील ही कर सकते थे। परन्तु यथार्थ यह है कि यह कारनामा केवल इब्राहीम (अ0) का ही नहीं, इस्माअ़ील ज़बीह (अ0) का भी है। **उन्होंने अत्यंत कमसिनी में जिस प्रकार अपने को हरि इच्छा के प्रति समर्पित किया वह भी ''ज़बीह'' का ही काम था।** दोनों में ईश्वरीय आसक्ति का भव बराबर था। दोनों सच्ची आसक्ति के उस स्थान के वासी थे जहां सिन व साल और अन्य दूसरे आयामों और लगावटों का बन्धन समाप्त हो जाता है वह साक्षात् तपन होते हैं, उनका अन्दाज़ संसार से निराला होता है। कअ़बे की स्थापना ऐसी ही साक्षात् और आसक्ति में मिटी हुई उंगलियों की राह देख रही थी। ''इब्राहीम'' (अ0) थे जिन्होंने एक हाथ से दुनिया के प्रत्येक बुत को टुकड़े–टुकड़े करके रख दिया तो दूसरे हाथ से आत्म–प्रेम, संसार –प्रेम की मूर्तियों को चूर–चूर कर डाला। दूसरे ''इस्माअ़ील'' अ0) जिन्होंने आज्ञापालन की दो मोटी ज़ंजीरें पहनकर परीक्षण की कांटों भरी और यातनादायी घाटी को तय किया। एक तरफ़ आपाती पालने वाले (बाप) के आज्ञा–पालक रहे तो दूसरी ओर वास्तविक पालने वाले के आदेश पर धैर्य बनाए रखा। संक्षेप में यह कि **अल्लाह की धरती की ज्योतिहीन आँखों को जिस मसीहा की खोज थी उसे वह मिल गया।** मूर्ति भंजन का पुरस्कार इब्राहीम (अ0) को यह मिला कि सकल संसार के ''क़िब्ले'' के निर्माण का सम्मान उनको प्राप्त हुआ। कअ्बे के निर्माण के बअ्द उन्हें आदेश हुआ, कि **''अब लोगों**

को इस घर की परिक्रमा के लिए पुकारो। लोग ज़मीन की गहराइयों और पहाड़ की चोटियों से पैदल व सवार आयेंगे और झूंड के झूंड आयेंगे।'' तुम्हारी जगह (मुक़ाम–ए–इब्राहीम) (अ0) पर नमाज़ पढ़ेंगे ''इस्माअ़ील'' के नाम पर बलि चढ़ाऐंगें, और यही हुआ कि कल तो मात्र दो हाजी थे–''इब्राहीम (अ0) और इस्माअ़ील'' (इ0) के रूप में। आज दो मिलियन से अधिक होते हैं उनके बेटे और लाखों क़ुर्बानियां मिना में दी जाती हैं।

अल्लाह की राह में धन की क़ुर्बानी के कई रास्ते हैं **परन्तु जिहाद के अतिरिक्त जान की क़ुर्बानी का एक ही रास्ता है,** जिसका सर्वश्रेष्ठ समय और अवसर **बक़रअ़ीद** है। इसलिए इस क़ुर्बानी में अत्यन्त पुण्य है। इसकी बड़ी ताकीद है और उधार लेकर भी क़ुर्बानी करने की हिदायत की गई हैं अगर अकेला एक आदमी एक क़ुर्बानी करने की सामर्थ्य न रखता हो तो दो आदमियों से लेकर सत्तर तक शरीक हो सकते हैं मगर क़ुर्बानी करना ही चाहिए। उतनी ही या उससे अधिक धनराशी की ख़ैरात इसका विकल्प नहीं हो सकती। यह न समझना चाहिए कि क़ुर्बानी केवल हाजियों के लिए है। क्योंकि प्रत्येक समर्थ व्यक्ति हर साल हज्ज की यात्रा नहीं कर सकता है परंतु प्रत्येक वर्ष क़ुर्बानी करके इस महान जिहाद में शरीक होना और क़ुर्बानी, शहादत, त्याग और इन्द्रिय दमन का जीवित करना संभव है। अन्य कोई मार्ग नहीं अलबता **यह सब मात्र ईश्वर के लिए होना चाहिए।** इसमें व्यक्तिगत स्वार्थ, मनोकामनाएं, मनोवृत्ति का झुकाव और रूज्हान का हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए। नहीं तो न प्रतिफल मिलेगा और न उसका लाभ प्राप्त हो सकेगा बल्कि वास्तव में जो क़ुर्बानी की अ़ीद का दर्शन है वह भी नमक समान धुल कर पानी हो जायेगा।

राष्ट्र निर्माण में बक़रअ़ीद की भूमिका

इस महान घटना में मानव जगत के लिये सामान्य रूप से और ''ख़लील'' की संतान के लिए विशेष रूप से हिदायत के अनमोल नमूने छिपे हुए हैं। सत्य पूजन और मूर्तिभंजन के अतिरिक्त **हमारे सामूहिक जीवन का गठन और दृढ़ता, रचना और विकास की कुंजी इसी अदभूद् घटना में है।** सत्य सुनने वाली श्रवण शक्ति हो तो सुनाई देगा कि यह दिन हमको प्रत्येक वर्ष याद दिलाता है कि **''बुज़ुर्गों का स्वपन नवयुवक ही साकार करते हैं।''** बुज़ुर्गों का कार्य परामर्श देना है और जवानों का उसे कार्य रूप प्रदान करना। **पुरानी और नई पीढ़ा की चेतना परक एवं व्यावहारिक एकता ही राष्ट्रीय विकास के भवन को गगनचुंबी बनाती है।** अगर बाप–बेटे के दृष्टिकोण में यकसानी न होती तो न यह घटना घटती न कअ़बा अल्लह का घर और लोगों के मार्ग दर्शन और स्थापना का कारण बनता और न ''इब्राहीम'' (अ0) को ''सामान्य सरदारी'' (इमामत्–ए–आम्मा) मिलती न ''इस्माअ़ील'' (अ0) को पैग़म्बरी और न मोक्ष प्राप्त पंथ **(उम्मत–ए–मर्हूमा) को ज़ब्ह–ए–अज़ीम (महाबलिदान) का अर्थ।**

इस प्रज्वलित घटना की आभा आज भी प्रकाश बिखेर रही है। ''इस्लामी ईरान'' की ध ारती पर इसी सत्य का उजाला फैला है हम देख रहे हैं कि राष्ट्र के एक बुज़ुर्ग मूर्ति विरोधी ने पिशाची शासन को निर्मूल करके **अल्लाह , क़ुआन और इस्लाम की हुकूमत स्थापित करने** का स्वप्न देखा था जिसे साकार रूप में बदलने और स्वप्न को सच कर दिखाने के लिए देश के जवान लगातर पन्द्रह वर्ष तक धूल और रक्त के सागर में तैराकी करते रहे और ''इस्माअ़ील'' (अ0) के हज़ारों हज़ार बेटों ने ''ईरानी पंथ'' के इब्राहीम (अ0) की आवाज़ पर ''लब्बैक'' अर्थात हाज़िर हुआ, उपस्थित हुआ कहते हूए मन–प्राण की भेंट प्रस्तुत की। जिसके फलस्वरूप **इस्लाम के प्रारंभिक काल के उपरान्त पहले पहल दुनिया में सच्ची इस्लामी हुकूमत स्थापित हुई।** जिसकी

धमक से अनीश्वरवाद के प्रासादों में कम्पन है। पिशाची सेना पिछड़ चुकी है प्रत्येक "नमरूद" की बोलती बन्द है और संसार के सभी दुर्बलों और बेबसों में नई शक्ति का संचार हुआ है और जब तक "इब्राहीम" (अ0) और "इस्माईल" (अ0) की पद्धति के अनुसार आचरण होता रहेगा, यह प्रकाश फैलता ही जायेगा और यह संभव नहीं कि कालिमा मुँह छिपाने पर विवश हो और मनुष्य के स्वातंत्रा और ईश्वर की अधिकारिता की मशाल से दुनिया का हर कंगूरा प्रकाशित हो जाए।

आज सकल संसार की पिशाची पलटनें ईरान को नीचा दिखाने पर तुली हैं। मगर उनकी पराजय अपयश कुछ प्राप्त नहीं हो रहा है। छह बरस की लंबी अवधि तक आर्थिक घेराव में रहकर शत्रुओं के दांत खट्टे कर देना केवल त्याग और बलिदान की भावना द्वारा संभव हुआ है। जो "हे खुमैनी ! मैं उपस्थित हुआ" के रूप में गूंज रहा है। **ईरान की अडिगता और महान संकल्प से दुनिया को एक नवीन दर्शन, नवीन जींवन पद्धति का सूत्र मिल रहा है और वह है इस्लाम।** जिसकी ओर दिन प्रतिदिन विकसित संसार का आकर्षण बढ़ता जा रहा। वह इस्लाम जो इब्राहीम (अ0) का दीन था। जिसे कुर्आन से कभी दीन–ए–क़य्यिम। सीधा दीन (कभी मिल्लत–ए–हनीफ़) असत्य से कतरा के चलने वाले इब्राहीम का पंथ कहा और खुदा अपने दोस्त को गर्व के साथ इसके अनुसरण का आदेश देता है और इसे सीधा मार्ग कहता है।

"कहो ! मेरे पालने वाले ने मुझे सीधे मार्ग का निर्देश कर दिया है वह सीधा धर्म और असत्य से कतरा के चलने वाले इब्राहीम (अ0) का पंथ है जो अनेकेश्वरवादी नहीं थे। कहो कि मेरी नमाज़, उपासना, जीवन–मरण, सभी लोकों के पालने वाले के लिए है। उसका कोई साझी नहीं और इसी का मुझे आदेश दिया गया है और मैं प्रथम मुस्लिम हूँ।"



ग़दीर

बिन्ते ज़हरा नक़वी नदल हिन्दी

नबी कब खुम में खुतबा पढ़ रहे हैं
बहुक्मे रब क़सीदा पढ़ रहे हैं
मलाएक वज्द में हैं क्यों कि अहमद
पसन्दीदह तराना पढ़ रहे हैं
समा–ए–ख़ुत्बा सामे को मुबारक
मगर हम आज लहजा पढ़ रहे हैं
मवद्दत रेज़ लहजे से है साबित
मोहब्बत का सहीफ़ा पढ़ रहे हैं
नदा अशआर जितने लिख चुकी है
उन्हें अक्सर अइज़्ज़ा पढ़ रहे हैं



सुन चुके हैं लोग पैग़ामे ग़दीर
चल रहे हैं बज़्म में जामे ग़दीर
क्या अजब है सुबह और शामे ग़दीर
रौनके आलम है अय्यामे ग़दीर
माहसल तबलीग़ का पूरा हुआ
आज कल है दीन इस्लामे ग़दीर
अरश रुत्बा फ़रश पर बैठे हैं आज
कम से कम इतना है इकरामे ग़दीर
हर तरफ सुनते हैं बख़्खिन की सदा
है ज़बाने ज़रे अहकामे ग़दीर
ले चले हुज्जाज बहरे अक़रेबा
तोहफए तबरीक व पैग़ामे ग़दीर
मनज़िले अनवार है मदफ़न नेदा
मरते ही पाया ये इनआमे ग़दीर

